

गणेश प्रतिमाओं का विधि-विधान से विसर्जन, निगम ने चाक-चौबंद की व्यवस्थाएं

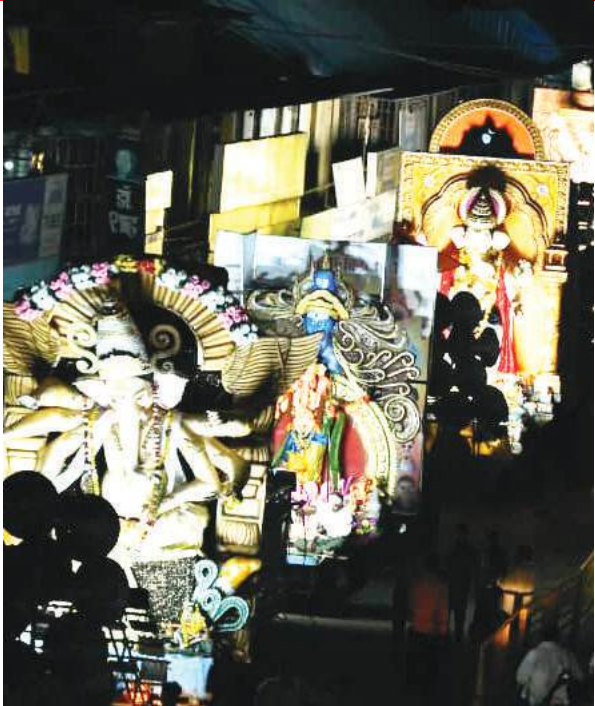
07 स्थायी घाट और 29 अस्थायी कुंडों पर 27616 प्रतिमाओं का विसर्जन

श्राद्ध पक्ष शुरू होने से पहले घाटों की सफाई पर भी जोर

गोपाल, यश भारत ।

अनंत चतुर्दशी पर राजधानी में भगवान श्री गणेश की प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए नगर निगम द्वारा की गई व्यवस्थाओं के चलते श्रद्धालुओं ने सुगमता और सुरक्षित तरीके से प्रतिमाओं का विसर्जन किया। शहर के सात प्रमुख स्थायी विसर्जन घाटों और 29 अस्थायी विसर्जन कुंडों पर समाचार लिखे जाने तक करीब 26404 छोटी और 1212 बड़ी प्रतिमाओं सहित कुल 27616 प्रतिमाओं का विधि-विधान एवं ससम्मान विसर्जन कराया जा चुका था।

निगम ने विसर्जन स्थलों पर सुरक्षा के लिए क्रेन, नाव, गोताखोर और दमकल दल की तैनाती की थी। घाटों और पहुंच मार्गों पर सफाई,



प्रकाश तथा पेयजल की व्यवस्था के साथ नियंत्रण कक्ष भी बनाए गए।

श्राद्ध पक्ष को लेकर सफाई पर विशेष ध्यान

गणेश विसर्जन के साथ ही शनिवार से श्राद्ध पक्ष भी शुरू हो रहा है। ऐसे में निगम के सामने विसर्जन स्थलों और आसपास के क्षेत्रों की सफाई व्यवस्था को तत्काल दुरुस्त रखने की जिम्मेदारी भी है। निगम द्वारा घाटों पर जमा निर्माल्य और अन्य अपशिष्ट को अलग-अलग एकत्र कर निष्पादन की व्यवस्था की गई है, ताकि श्राद्ध पक्ष के दौरान घाटों और जलस्रोतों के आसपास स्वच्छता बनी रहे।

विशेष वाहनों की व्यवस्था की गई। आयुक्त ने घाटों का किया निरीक्षण निगम आयुक्त संस्कृति जैन ने शुक्रवार को शाहपुरा, हथाईखेड़ा, खटलापुरा, रानी कमलापति और प्रेमपुरा विसर्जन घाटों का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए व्यवस्थाएं लगातार बेहतर बनाए रखने के निर्देश दिए। साथ ही पूजा सामग्री के लिए सूखे और गीले निर्माल्य को अलग-अलग रखने तथा विसर्जन के बाद घाटों की तत्काल सफाई कराने पर जोर दिया। विभिन्न घाटों पर बड़ी संख्या में प्रतिमाओं का विसर्जन हुआ। प्रेमपुरा में करीब 5000 छोटी और 260 बड़ी, रानी कमलापति में 2000 छोटी और 40 बड़ी, खटलापुरा में 3335 छोटी और 56 बड़ी, शाहपुरा में 6300 छोटी और 405 बड़ी, बैरागढ़ में 2200 छोटी और 85 बड़ी, मालीखेड़ी में 2400 छोटी और 109 बड़ी तथा हथाईखेड़ा में 1300 छोटी और 257 बड़ी प्रतिमाओं का विसर्जन कराया गया।



तहसील चौराहे पर नारेबाजी, मुख्य चुनाव आयुक्त का पुतला फूँका

आष्टा, यश भारत ।

मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं के विरोध में शुक्रवार को ग्रामीण और नगर कांग्रेस के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने तहसील चौराहे पर प्रदर्शन किया। इस दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का पुतला फूँका गया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए मतदाता सूची की पारदर्शी जांच कराने की मांग की।

कांग्रेस नेताओं ने राहुल गांधी द्वारा मतदाता सूची में गड़बड़ी को लेकर लगाए गए आरोपों का हवाला देते हुए कहा कि मतदाताओं के नाम जोड़ने और हटाने की प्रक्रिया सार्वजनिक एवं पारदर्शी होनी चाहिए। कांग्रेस ने फॉर्म-7 के कथित दुरुपयोग से मतदाताओं के नाम हटाए जाने का आरोप लगाते हुए पूरी मतदाता सूची सार्वजनिक करने की मांग की।

प्रदर्शन के दौरान वोट चोर गद्दी छोड़ी और चुनाव आयोग होश में आओ के नारे लगाए गए। प्रदर्शन में एआईसीसी सदस्य हरपाल सिंह ठाकुर, जिला पंचायत सदस्य कमल सिंह चौहान, ग्रामीण ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष महेश मुंढीखेड़ी, नगर कांग्रेस अध्यक्ष जाहिद खान गुड्डू, जितेंद्र शोभाखेड़ी सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

गंदगी फैलाने वालों पर नगर निगम ने होटल पर हुई कार्रवाई, हुआ जुर्माना

गोपाल यश भारत ।

राजधानी को स्वच्छ और साफ-सुथरा बनाने के लिए नगर निगम द्वारा लगातार सफाई अभियान चलाया जा रहा है। शहर के अलग-अलग वार्डों में सफाई व्यवस्था की निगरानी के साथ गंदगी फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। निगम की टीमों लोगों और प्रतिष्ठानों को कचरा नालियों खुले स्थानों और सीवेज चेंबर में नहीं डालने की समझाइश भी दे रही हैं। इसके बावजूद कुछ प्रतिष्ठानों द्वारा स्वच्छता नियमों की अनदेखी किए जाने के मामले सामने आ रहे हैं। ताजा मामला जोन 13 के वार्ड-52 का है जहां बैस्टियन होटल द्वारा किचन वेस्ट सीवेज चेंबर में डाले जाने की शिकायत पर नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग और सीवेज टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की। जांच के दौरान सीवेज चेंबर में किचन वेस्ट डाले जाने की पुष्टि होने पर निगम की टीम ने होटल के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 20 हजार का स्पॉट फाइन लगाया। नगर निगम की इस



कार्रवाई से साफ है कि स्वच्छता नियमों की अनदेखी करने वाले प्रतिष्ठानों पर अब सख्ती की जा रही है। निगम की ओर से लोगों और व्यवसायिक प्रतिष्ठानों से अपील की गई है कि कचरा निर्धारित स्थान पर ही डालें और नालियों व सीवेज चेंबर में किसी भी तरह का कचरा न डालें। नियमों का उल्लंघन करने पर जुर्माने के साथ अन्य कार्रवाई भी की जा सकती है।

समझाइश के बाद अब सीधे कार्रवाई

नगर निगम की कार्रवाई के बाद यह स्पष्ट संदेश दिया गया है कि शहर को गंदगी से मुक्त रखने के अभियान में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। निगम का कहना है कि नियमों का पालन नहीं करने वालों के खिलाफ आगे भी कार्रवाई जारी रहेगी।

ग्रीनहाउस मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ने एनएचबी को सौंपा ज्ञापन

पॉलीहाउस सब्सिडी 50 से घटाकर 35% करने का विरोध, पुरानी परियोजनाओं पर पुराने नियम लागू करने की मांग

गोपाल, यश भारत ।

राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड द्वारा संरक्षित खेती के लिए दी जाने वाली सहायता में बदलाव और नए आवेदनों पर रोक के विरोध में ग्रीनहाउस मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ने शुक्रवार को भोपाल स्थित राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड कार्यालय में ज्ञापन सौंपा। एसोसिएशन ने 21 अगस्त और 3 सितंबर 2026 को जारी किए गए परिपत्रों को वापस लेने तथा पहले से स्वीकृत और बैंक से वित्त पोषित परियोजनाओं को पुराने दिशा निर्देशों के अनुसार पूरा करने की मांग की है।

एसोसिएशन का कहना है कि 21 अगस्त 2026 के परिपत्र से संरक्षित खेती की सहायता 50 प्रतिशत से घटाकर 35 प्रतिशत कर दी गई। संगठन के अनुसार इसका प्रभाव उन परियोजनाओं पर भी पड़ा है, जिन्हें पहले ही स्वीकृत मिल चुकी थी और जिनके लिए बैंकों से वित्त की व्यवस्था की जा चुकी थी। एसोसिएशन ने कहा कि ऋण आधारित व्यवस्था में किसान परियोजना की पूरी लागत बैंक से ऋण लेकर वहन करता है और सहायता परियोजना पूरी होने के बाद मिलती है। ऐसे में स्वीकृति के बाद नियमों में बदलाव



का आर्थिक भार किसानों पर पड़ रहा है। जून से पॉलीहाउस परियोजनाओं के लिए क्लियरेंस जारी नहीं होने का दावा-ज्ञापन में एसोसिएशन ने दावा किया कि जून 2026 से पॉलीहाउस परियोजनाओं के लिए एक भी ग्रांट ऑफ क्लियरेंस जारी नहीं हुई है। 3 सितंबर के परिपत्र के बाद नए आवेदन स्थगित कर पोर्टल बंद कर दिया गया है। साथ ही कुछ फाइलों को सीओजी इशू से सीओजी क्वारी में किए जाने पर भी आपत्ति जताई गई है। एसोसिएशन ने क्लियरेंस जारी करने की

प्रक्रिया दोबारा शुरू करने और जून से अब तक क्लियरेंस जारी नहीं होने का कारण लिखित रूप में बताने की मांग की है। 50% सहायता बहाल करने समेत सात मांगें-एसोसिएशन ने मांग की है कि 21 अगस्त 2026 या उससे पहले की ग्रांट ऑफ क्लियरेंस लंबित आवेदन और बैंक स्वीकृतियों को पुराने नियमों के अनुसार 50 प्रतिशत सहायता पर पूरा किया जाए। परिवार में किए जाने पर भी आपत्ति जताई गई है। एसोसिएशन ने क्लियरेंस जारी करने की

समाप्त करने और किसान समूहों को फिर से पात्रता देने की मांग भी की गई है। इसके अलावा संरक्षित खेती के लिए 50 प्रतिशत सहायता बहाल करने अथवा वर्तमान बाजार दर के अनुसार लागत मानदंड संशोधित कर उन्हें हर साल सूचकांकित करने की मांग की गई है। पॉलीहाउस और संरक्षित खेती की सामग्री पर जीएसटी 18 से घटाकर 5 प्रतिशत करने का विषय केंद्र सरकार और जीएसटी परिषद के समक्ष रखने की मांग भी ज्ञापन में शामिल है।

सात दिन में समाधान नहीं तो आंदोलन की चेतावनी-एसोसिएशन ने कहा है कि यदि ज्ञापन सौंपे जाने के सात दिन के भीतर 21 अगस्त का परिपत्र वापस नहीं लिया गया और मांगों पर समाधान नहीं हुआ तो दस राज्यों के पॉलीहाउस किसान और संरक्षित खेती उद्योग से जुड़े लोग गुरुग्राम स्थित राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड मुख्यालय और नई दिल्ली में एकत्र होकर आंदोलन करेंगे। संगठन ने ज्ञापन की प्रति राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के प्रबंध निदेशक तथा कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय को भेजने और सात दिन में लिखित जवाब देने की मांग की है।

11वां आयुर्वेद दिवस : स्वस्थ भविष्य के लिए आयुर्वेद का संकल्प लिया

हिरदाराम नगर, यशभारत

आरोग्य केंद्र 11वां आयुर्वेद दिवस हर्षल्लास के साथ मनाया गया, जो स्वस्थ भविष्य के लिए आयुर्वेद थीम पर केन्द्रित था। कार्यक्रम में लोगों को जागरूक करना और दैनिक जीवन में आयुर्वेद की भूमिका को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प दोहराया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मेडिकल डायरेक्टर डॉ. गुलाब राय टेवानी द्वारा भगवान धन्वंतरि की प्रतिमा स्थापना, विधि-विधान से पूजन और आरती के साथ हुआ। इस मौके पर आमजन के लिए निःशुल्क आयुर्वेदिक पंजीकरण एवं परामर्श की सुविधा दी गई। साथ ही, एक दिवसीय विशेष शिविर में निःशुल्क स्वेदन चिकित्सा का आयोजन किया गया, जिससे लोगों को आयुर्वेदिक उपचार पद्धतियों का व्यावहारिक लाभ मिला। डॉ. टेवानी ने आयुर्वेद को भारतीय धरोहर बताते हुए कहा कि यह केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि संतुलित आहार और प्राकृतिक दिनचर्या के माध्यम से स्वास्थ्य संरक्षण पर बल देता है। संस्था द्वारा योग और प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से जन-स्वास्थ्य जागरूकता की गतिविधियां निरंतर आयोजित की जाती हैं।



विधि-विधान से शुरू हुआ निर्माण, विधायक ने 11 लाख रुपये देने की घोषणा की बुधवारा के प्राचीन श्रीराम मंदिर के पुनर्निर्माण का शुभारंभ

आष्टा, यश भारत ।

बुधवारा क्षेत्र स्थित अति प्राचीन श्रीराम मंदिर के पुनर्निर्माण कार्य का शुभारंभ अनंत चतुर्दशी के अवसर पर विधि-विधान और मंत्रोच्चार के साथ किया गया। विधायक गोपालसिंह इंजीनियर और महामंडलेश्वर दीपकदास महाराज ने पूजन कर निर्माण कार्य की शुरुआत की। मंदिर पुनर्निर्माण को लेकर श्रद्धालुओं और क्षेत्रवासियों में उत्साह देखा गया। विधायक गोपालसिंह इंजीनियर ने मंदिर निर्माण के लिए 11 लाख रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यह मंदिर नगर की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने पुराने आष्टा की पहाड़ी स्थित मंदिर तक पहुंच मार्ग के लिए दो करोड़ रुपये से अधिक की लागत से कराए गए निर्माण कार्य की जानकारी भी दी। महामंडलेश्वर दीपकदास महाराज ने



कहा कि प्राचीन मंदिरों का संरक्षण और पुनर्निर्माण धार्मिक परंपराओं को आगे बढ़ाने का माध्यम है। मंदिर

समिति अध्यक्ष गोविंद सोनी बहुरानी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए निर्माण में सहयोग की अपील की।

कार्यक्रम में विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी, श्रद्धालु और गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

नमामि भारतम् में 150 वर्ष की यात्रा पर मंथन, विद्यार्थियों ने किया सामूहिक गायन

वंदे मातरम् की गूंज में दिखी संघर्ष और स्वाभिमान की कहानी

गोपाल यश भारत ।

वंदे मातरम् की 150 वर्ष की यात्रा को केंद्र में रखकर शुक्रवार को सरस्वती विद्या मंदिर हर्षवर्धन नगर में नमामि भारतम् कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों शिक्षकों युवाओं और नागरिकों ने सामूहिक रूप से वंदे मातरम् का गायन किया। इस दौरान वक्ताओं ने इसके ऐतिहासिक महत्व और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े संदर्भों पर विचार रखे। मुख्य वक्ता सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. राजकुमार मालवीय ने कहा कि वंदे मातरम् को केवल एक गीत के रूप में नहीं बल्कि मातृभूमि के प्रति श्रद्धा



स्वाभिमान और राष्ट्रचेतना से जुड़े भाव के रूप में समझने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इसकी 150 वर्ष की यात्रा भारत के संघर्ष त्याग और राष्ट्रीय चेतना से जुड़े

अनेक प्रसंगों को समेटे हुए है। नई पीढ़ी को इसके शब्दों के साथ उनके ऐतिहासिक संदर्भ की जानकारी भी होनी चाहिए। डॉ. मालवीय ने वंदे मातरम् की रचना

से लेकर राष्ट्रीय आंदोलन में इसकी भूमिका तक की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 1875 में इसकी रचना की थी। 1896 के कांग्रेस अधिवेशन में इसके गायन का उल्लेख मिलता है जबकि 1905 के बंग भंग आंदोलन के दौरान यह व्यापक राष्ट्रीय उद्घोष बना। विद्या भारती के तत्वावधान में हुए आयोजन में सुबह 11 बजे एक साथ सामूहिक गायन हुआ। वरिष्ठ नेता महेश जोशी ने भी विचार रखे। अध्यक्षता कर रहे डॉ. सुनील राय ने कहा कि राष्ट्रभाव को जीवन में उतारना जरूरी है।

बालरंग में सांदीपनि विद्यालय के विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

आष्टा, यश भारत । सांदीपनि शासकीय उमावि आष्टा के विद्यार्थियों ने जिला स्तरीय बालरंग प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विभिन्न विधाओं में विद्यालय का नाम रोशन किया। रानू महेश्वरी ने शास्त्रीय नृत्य, परिधि धनगर ने योग, निर्यति वर्मा ने संस्कृत भाषण और शिवम शर्मा ने वेदपाठ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। चारों विद्यार्थी अब भोपाल में होने वाली संभाग स्तरीय प्रतियोगिता में सीहोर जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्राचार्य सितवत खान ने बताया कि विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को मंच देने के लिए विद्यालय में संगीत, नृत्य सहित विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं। प्रतियोगिता में आयुष्मान वर्मा, किरण वर्मा, तस्मियां, सादिया अली, समर्थ जैन, विद्या राजपूत, विवेक सेन और मीता प्रजापति ने विभिन्न विधाओं में द्वितीय स्थान हासिल किया। वहीं निहारिका सैधव, सुमैया जहां और सुजीत घनशैल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों की सफलता पर विद्यालय परिवार ने उन्हें बधाई दी।

मालवा और सोमनाथ एक्सप्रेस अब भोपाल की बजाय निशातपुरा में रुकेंगी

गोपाल, यश भारत ।

रेल यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण बदलाव के तहत 26 सितंबर 2026 से मालवा एक्सप्रेस और सोमनाथ एक्सप्रेस का ठहराव भोपाल स्टेशन की बजाय निशातपुरा स्टेशन पर होगा। परिचम मध्य रेलवे के भोपाल मंडल ने यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इन ट्रेनों को संत हिरदाराम नगर-निशातपुरा कॉर्ड लाइन से चलाने का निर्णय लिया है। इसके चलते दोनों ट्रेनें भोपाल स्टेशन को बायपास करेंगी। गाड़ी संख्या 12919/12920 डॉ. अंबेडकर नगर-श्री माता वैष्णो देवी कटरा मालवा एक्सप्रेस प्रतिदिन निशातपुरा स्टेशन पर रुकेगी। 12919 मालवा एक्सप्रेस शाम 5.20 बजे निशातपुरा पहुंचेगी और 5.30 बजे खाना होगी। वापसी में गाड़ी संख्या 12920 सुबह 7.25 बजे निशातपुरा पहुंचेगी और 7.35 बजे प्रस्थान करेंगी।

सोमनाथ एक्सप्रेस भी निशातपुरा से चलेगी

गाड़ी संख्या 11465 जबलपुर-वेरावल सोमनाथ एक्सप्रेस सप्ताह में दो दिन निशातपुरा स्टेशन पर सुबह 6.40 बजे पहुंचेगी और 6.45 बजे खाना होगी। वहीं गाड़ी संख्या 11466 वेरावल-जबलपुर सोमनाथ एक्सप्रेस रात 8.10 बजे निशातपुरा पहुंचेगी और 8.15 बजे प्रस्थान करेंगी।

प्रयत्न में ऊब नहीं



संसार में गति के जो नियम हैं, परमात्मा में गति के ठीक उन्से उलटे नियम काम आते हैं और यहीं बड़ी मुश्किल हो जाती है। संसार में ऊबना बाद में आता है, प्रयत्न में ऊब नहीं आती। इसलिए संसार में लोग गति करते चले जाते हैं। पर परमात्मा में प्रयत्न में ऊब आती है और प्रयत्न पहले ही उबा देगा, तो आप रुक जाएंगे। कितने लोग हैं जो प्रभु की यात्रा शुरू भर करते हैं, पर कभी पूरी नहीं कर पाते। कितनी बार तय किया कि स्मरण कर लेंगे प्रभु का घड़ीभर! एकाध दिन, दो दिन। फिर ऊब गए। फिर छूट गया। कितने संकल्प, कितने निर्णय, धूल होकर पड़े हैं चारों तरफ! लोग कहते हैं कि ध्यान से कुछ हो सकेगा? मैं कहता हूँ जरूर हो सकेगा। कठिनाई सिर्फ एक है, सातत्य! कितने दिन कर सकोगे? मुश्किल से कोई मिलता है, जो तीन महीने भी सतत कर पाता है। दस-पांच दिन बाद ऊब जाता है! आश्चर्य है कि मनुष्य जिंदगी भर अखबार पढ़कर नहीं ऊबता, रेडियो सुनकर नहीं ऊबता, फिल्म देखकर नहीं ऊबता, रोज वही बातें करके नहीं ऊबता। ध्यान करके क्यों ऊब जाता है? आखिर ध्यान में ऐसी क्या कठिनाई है! कठिनाई एक ही है कि संसार की यात्रा पर प्रयत्न नहीं उबाता, प्राप्ति उबाती है और परमात्मा की यात्रा पर प्रयत्न उबाता है, प्राप्ति कभी नहीं उबाती। जो पा लेता है, वह फिर कभी नहीं ऊबता। बुद्ध ज्ञान के बाद चालीस साल जिंदा थे।

चालीस साल किसी ने एक बार उन्हें अपने ज्ञान से ऊबते हुए नहीं देखा। कोहनूर हीरा मिल जाता चालीस साल तो ऊब जाते। संसार का राज्य मिल जाता तो ऊब जाते। महावीर भी चालीस साल जिंदा रहे ज्ञान के बाद। निरंतर उसी ज्ञान में रमे रहे, कभी ऊबे नहीं! कभी चाहा नहीं कि कुछ और मिल जाए। परमात्मा की यात्रा पर प्राप्ति के बाद कोई ऊब नहीं है। इसलिए कृष्ण कहते हैं कि बिना ऊबे श्रम करना कर्तव्य है, करने योग्य है। अर्जुन कैसे माने और क्यों मानें? अर्जुन तो जब प्रयास करेगा, तो ऊबेगा, थकेगा। कृष्ण कहते हैं, इसलिए धर्म में टूट्ट का, भरोसे का एक कीमती मूल्य है। श्रद्धा का अर्थ होता है, टूट्ट। उसका अर्थ होता है, कोई कह रहा है। अर्जुन भलीभांति कृष्ण को जानता है। कृष्ण को भी विचलित नहीं देखा है। कृष्ण को उदास नहीं देखा है। कृष्ण की बांसुरी से कभी दुख का स्वर निकलते नहीं देखा है। कृष्ण सदा ताजे हैं।

कड़वे वचन

छाता बारिश को रोक तो नहीं सकता
परन्तु बारिश में खड़े रहने का हाँसला
जरूर दे सकता है। ठीक इसी तरह से
सत्यंग और प्रवचन तुम्हारे दुखों को नष्ट
तो नहीं कर सकते परन्तु उठे सहने की
ताकत जरूर दे सकते हैं दुख में से सुख खोजने की कला जरूर सिखा
सकते हैं। इसलिए सत्यंग करो, उससे तुम्हें दुख सहने की ताकत
मिलेगी और तुम अभाव में भी मुस्कुरा सकोगे।

आज का राशिफल

पंचांग:- 27 सितंबर 2026
दिन- रविवार, माह- भाद्र शुक्ल पक्ष
विक्रम संवत् 2083



ज्योतिषाचार्य गिंडा
लोकेश व्यास

मेघ सु. ये. चो. रा. रा. चो. ले. ले. आ. स्थान परिवर्तन चाहने वाले लोगों को कुछ उम्मीद नजर आएगी मनोबल बढ़ेगा	वृष इ. स. ए. आ. या. रा. सु. ये. चो युवक वर्ग व्यक्तितगत और व्यवहारिक गतिचिधियों में तालमेल बनाकर र खेंगे
मिथुन रा. रा. चो. रा. रा. चो. सु. ये. चो. किसी संबंधी जनों की आर्थिक मदद करनी पड़ सकती है अन्य खर्चें भी परेशान करेंगे	कर्क रा. रा. चो. रा. रा. चो. सु. ये. चो. अपनी सुझबुझ के साथ नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छे परिणाम हासिल कर सकते हैं
सिंह मा. नी. मृ. मे. रा. चो. सु. ये. चो. व्यवसाय में अनिश्चितता रहने से चिंता बढ़ेगी अनावश्यक तनाव ना ले	कन्या रा. रा. चो. रा. रा. चो. सु. ये. चो. अत्यधिक तनाव और मेहनत की वजह से आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है ध्यान रखें
तुला रा. रा. चो. रा. रा. चो. सु. ये. चो. जोरिखम भरे कामों से दूर रहे अनावश्यक सलाह ना दें	वृश्चिक रा. रा. चो. रा. रा. चो. सु. ये. चो. अपने आसपास की परिस्थितियों में बदलाव महत्सु करेंगे आज की मेहनत भविष्य में अच्छे परिणाम दे सकती है
धनु ये. चो. मा. सो. मृ. रा. का. ध. रा. व्यवसाय में अत्यधिक भाग दोड़ बनी रहेगी स्वास्थ्य पर अवश्य ध्यान दें	मकर भो. आ. जी. ली. या. जी. सो. या. जी. परिवार जनों के आपसी सहयोग से माहौल सकारात्मक बना रहेगा वाहन सावधानी पूर्वक चलाएं
कुंभ सु. ये. चो. रा. रा. चो. सु. ये. चो. शांतिपूर्ण तरीके से काम करने की कोशिश करें तनाव से दूर रहने की कोशिश करें	मीन ली. द. रा. इ. अ. दे. सो. या. जी. संतुलित आहार ले दिनचर्या को सुधारने की कोशिश करें

विचार प्रवाह

प्रकृति, संस्कृति और समाज को जोड़ता सतत पर्यटन

विश्व पर्यटन दिवस (27 सितम्बर) पर विशेष)

पर्यटन केवल मनोरंजन, सैर-सपाटे या विश्राम का माध्यम नहीं है, यह मानव सभ्यता के विकास में निरंतर योगदान देने वाला एक ऐसा वैश्विक उद्योग है, जिसने संस्कृतियों को जोड़ा, विविधताओं को समझने का अवसर दिया और आर्थिक समृद्धि के साथ सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। 'संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन' द्वारा प्रतिवर्ष 27 सितम्बर को मनाया जाने वाला यह दिवस विश्व समुदाय को पर्यटन के बहुआयामी महत्व और इसके दूरगामी प्रभावों पर पुनर्विचार करने का अवसर प्रदान करता है। पर्यटन का दुनिया की अर्थव्यवस्था में स्थान असाधारण है। वैश्विक स्तर पर यह उद्योग प्रतिवर्ष अरबों डॉलर का राजस्व उत्पन्न करता है और करोड़ों लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्टों के अनुसार, वैश्विक स्तर पर प्रत्येक दस में से एक नौकरी पर्यटन से जुड़ी है। विकसित देशों के साथ-साथ विकासशील राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में भी यह एक प्रमुख आधार स्तंभ के रूप में कार्य करता है। भारत की बात करें तो यह क्षेत्र देश की जीडीपी में लगभग 10 प्रतिशत योगदान देता है और सीधे या अपरोक्ष रूप से पांच करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। विश्व पर्यटन दिवस का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि यह हमें केवल आर्थिक आंकड़ों की चमक पर नहीं बल्कि उन सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों पर भी ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है, जिन्हें पर्यटन उद्योग के सतत विकास के लिए प्राथमिकता देना आवश्यक है।

पर्यटन सामाजिक समानता और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने का सशक्त माध्यम है। जब एक यात्री किसी दूसरे देश, राज्य या संस्कृति से जुड़ता है तो यह केवल यात्रा नहीं होती बल्कि यह संवाद, सहअस्तित्व और समझदारी का अवसर बनती है। एक और यह यात्रियों को नए अनुभव और दृष्टिकोण प्रदान करता है जो दूसरी ओर स्थानीय समुदायों को अपनी संस्कृति, परंपराओं



और जीवनशैली को साझा करने का अवसर देता है। यही कारण है कि पर्यटन सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और पारंपरिक कलाओं, शिल्प और रीति-रिवाजों को पुनर्जीवित करने में मदद करता है। कई बार जो कला या परंपरा लुप्त होने के कगार पर होती है, वह पर्यटन के कारण नए जीवन का संचार प्राप्त करती है। आधुनिक समय में जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियां पर्यटन के समझ सबसे बड़ी बाधाएं बनकर उभरी हैं। पर्यटन का अत्यधिक और अनियंत्रित विकास कई बार प्राकृतिक पारिस्थितिक संतुलन को बिगाड़ देता है। पर्वतीय क्षेत्रों में अत्यधिक पर्यटकों का दबाव ग्लेशियरों और प्राकृतिक संसाधनों पर प्रतिकूल असर डालता है, समुद्र तटों पर अनियंत्रित पर्यटन समुद्री जीवन को खतरे में डालता है और ऐतिहासिक धरोहरों पर भीड़भाड़ से उनका संरक्षण कठिन हो जाता है। यही कारण है कि 'सतत पर्यटन' की अवधारणा आज सर्वाधिक चर्चा में है। सतत पर्यटन का अर्थ है ऐसा पर्यटन, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग हो, स्थानीय समुदायों को अधिकतम लाभ मिले और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण सुरक्षित रहे। इस दिशा में अनेक देशों ने उल्लेखनीय पहल की है। उदाहरणस्वरूप, भूटान ने पर्यटन पर 'हैडि कैल्यू' लो वॉल्यूम' नीति अपनाई है, जिसके अंतर्गत वह पर्यटकों

न देख अशोक अपना आपा खोने लगा। वह किसी भी तरह अपने दोस्त आदर्श को इस प्रकरण से बाहर निकालना चाहता था। वह समझ चुका था कि अब सीधी उँगली से घी नहीं निकलेगा और न ही कानूनी प्रक्रिया से हल निकलने वाला। वह समझ चुका था कि आगे की परिस्थितियाँ सम्हलने हेतु अब उसे खुद ही कोई निर्णय लेना होगा। बार-बार समझाने के बाद भी जब आदर्श उसके अनुसार आगे बढ़ने हेतु तैयार नहीं हुआ तो अशोक चिल्ला पड़ा-

‘अब आगे कुछ मत कहना आदर्श।’

तुझे क्या पता कि कितनी बार इन लोगों ने तुझे अपने रास्ते से हटाना चाहा लेकिन मैंने कभी ऐसा होने नहीं दिया। मेरी व्यस्तताओं के कारण इस बार इन लोगों को मौका मिल गया और तुझे अभिमन्यु के चक्रव्यूह में फँसा लिया। मैं जानता हूँ अभिमन्यु का क्या हश्र हुआ था, लेकिन मैं यह भी अच्छी तरह से जानता हूँ कि वह द्वारप युग था, कलयुग नहीं। इस कलयुग में हर मुसीबत का निदान है। कैसे सरकार बनाना है, कैसे सरकार गिराना है। किसका कैरियर चौपट करना है और किसका बनाना है। और तो और किसके साथ कब तथा कैसा सलूक करना है मुझे सब पता है। मैंने तो यह भी पढ़ा है कि एक अन्याय, एक झूठ और एक हिंसा यदि किसी सच्चे इंसान को बचा ले तो वह गलत नहीं कहलाता। जमाना अब भी जिसकी लाठी उसकी भैंस जानता है। हम तुम्हें बहुत अच्छे से जानते हैं आदर्श! तुमने कभी एक चींटी तो मारी नहीं, इन कुख्यात भेड़ियों से मुकाबला कैसे करोगे?

अशोक के क्रोधातिरेक को देखते हुए आदर्श बोला- भाई इस दुनिया में शराफत नाम की भी कोई चीज है कि नहीं। जब वक्त करवट बदलता है तो ये दबंगों, हत्याएं, लूटमार और आतंकी खौफ़ सब चूहे की तरह किसी बिल में छिप जाते हैं।

तब अशोक ने बड़े निराशा भरे भाव से कहा- मेरे भाई आदर्श! तब तक बहुत देर हो चुकी होगी और यही सब लोग तेरी शराफत पर ठहाके लगाएंगे। यह भी तो शाश्वत सच है कि जब जीवन रहेगा तभी तो कुछ कर पाओगे। इसलिए अब मुझे मत रोकना।

-**डॉ विजय तिवारी 'किसलय' जबलपुर- 482002**

पितरों को तर्पण -मृत्यु के बाद भव्य श्राद्ध,पर जीते-जी बुजुर्गों व माता-पिता की उपेक्षा क्यों?

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर भारत की हजारों वर्षों पुरानी सभ्यता में माता-पिता,गुरु और पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता को केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं,बल्कि जीवन-मृत्यु माना गया है।इसी भावना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्वरूप है पितृ पक्ष,जिसमें मनुष्य अपने दिवंगत पूर्वजों को स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करता है।वर्ष 2026 में तिथियों को लेकर 26 और 27 सितंबर का कुछ भ्रम दिखाई दे रहा है,किंतु मीडिया में आई पंचांग गणना के अनुसार 26 सितंबर 2026,शनिवार को भाद्रपद पूर्णिमा और पूर्णिमा श्राद्ध है,जबकि मुष्टि पितृ पक्ष का आरंभ 27 सितंबर 2026, रविवार को प्रतिपदा श्राद्ध से होगा और 10 अक्टूबर 2026,शनिवार को सर्वपितृ अमावस्या के साथ इसका समापन होगा।पूर्णिमा श्राद्ध 26 सितंबर को पितृ पक्ष से ठीक पहले पड़ता है।प्रतिपदा तिथि 26 सितंबर की रात प्रारंभ होने के कारण भी दोनों तारीखों को लेकर भ्रम पैदा होता है।सर्वपितृ अमावस्या 10 अक्टूबर को है। इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से 26 सितंबर का भी श्राद्ध संबंधी महत्व है,लेकिन प्रतिपदा से आरंभ होने वाला पितृ पक्ष 27 सितंबर से माना जाना अधिक सटीक है।परंतु मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र बताना चाहूंगा कि पितृ पक्ष 2026 का सबसे बड़ा प्रश्न पंचांग की तारीख नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक चरित्र की तारीख बदलने का है। जिस देश की संस्कृति 'मातृ देवो भव,पितृ देवो भव' का संदेश देती है,उसी समाज के सामने आज यह असहज प्रश्न खड़ा है कि कहीं हम मृत्यु के बाद माता-पिता के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने में तो आगे नहीं बढ़ रहे, लेकिन उनके जीवित रहते हुए उनके लिए सम्य, संवाद, सम्मान और सहाय देने में पीछे तो नहीं हट रहे? तकनीकी और डिजिटल युग ने दुनिया को हथेली पर ला दिया है, परंतु कई परिवारों में एक ही घर के सदस्यों के बीच भावनात्मक दूरी बढ़ने की चिंता भी लगातार

व्यक्त की जाती है।नई पीढ़ी शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय और वैश्विक अवसरों के कारण शहरों तथा विदेशों तक पहुंच रही है जो स्वयं में सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक प्रगति है लेकिन इस प्रगति का अर्थ माता-पिता और बुजुर्गों से भावनात्मक संबंध समाप्त होना नहीं हो सकता।तकनीक समस्या नहीं है; समस्या तब है जब सुविधा संवेदना की जगह लेने लगे। साथियों बात अगर हम 26 सितंबर से 10 अक्टूबर 2026 तक प्रत्येक दिन के श्राद्ध को समझने की करें तो 26 सितंबर-2026, शनिवार- पूर्णिमा श्राद्ध,27 सितंबर, रविवार-प्रतिपदा श्राद्ध, 28 सितंबर,सोमवार-द्वितीया श्राद्ध, 29 सितंबर, मंगलवार- तृतीया श्राद्ध और महाभरणी श्राद्ध 30 सितंबर,बुधवार- चतुर्थी और पंचमी श्राद्ध, 1 अक्टूबर, गुरुवार- षष्ठी श्राद्ध, 2 अक्टूबर, शुक्रवार- सप्तमी श्राद्ध, 3 अक्टूबर, शनिवार- अष्टमी श्राद्ध, 4 अक्टूबर, रविवार- नवमी श्राद्ध, 5 अक्टूबर, सोमवार- दशमी श्राद्ध, 6 अक्टूबर, मंगलवार- एकादशी श्राद्ध, 7 अक्टूबर, बुधवार- द्वादशी और मघा श्राद्ध, 8 अक्टूबर, गुरुवार- त्रयोदशी श्राद्ध, 9 अक्टूबर, शुक्रवार- चतुर्दशी श्राद्ध, 10 अक्टूबर शनिवार सर्वपितृ अमावस्या साथियों,सोशल मीडिया पर समय-समय पर ऐसे मार्मिक वीडियो,समाचार और दाये सामने आते रहते हैं जिनमें कहीं वृद्ध माता-पिता को अकेला छोड़ने, कहीं बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और कहीं संतान द्वारा अंतिम समय में भी उपस्थित न हो पाने जैसी घटनाएं दिखाई जाती हैं। प्रत्येक वायरल वीडियो की स्वतंत्र सत्यता जांच बिना उसे पूरे समाज का प्रतिनिधि तथ्य नहीं माना जा सकता, लेकिन ऐसी घटनाएं एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न अवश्य खड़ा करती हैं,यदि माता-पिता जीवित रहते हुए हमारी उपस्थिति, प्रेम और सहारे के लिए तरसते रहें, तो

की संख्या सीमित रखते हुए गुणवत्तापूर्ण अनुभव प्रदान करता है ताकि पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संतुलन बना रहे। इसी प्रकार यूरोप के कई देशों ने 'ग्रीन टूरिज्म' मॉडल को अपनाकर पर्यावरणीय जिम्मेदारी को प्राथमिकता दी है। भारत में भी सतत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनमें इको-टूरिज्म, ग्रामीण पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन को विशेष महत्व दिया जा रहा है। पर्यटन का महत्व शिक्षा और कौशल विकास के संदर्भ में भी कम नहीं है। यह न केवल यात्रियों को नई संस्कृतियों और भौगोलिक क्षेत्रों से परिचित कराता है बल्कि युवाओं को आतिथ्य, प्रबंधन, संचार और सांस्कृतिक समझ जैसे कौशल सीखने के अवसर भी देता है। भारत जैसे देश, जहां युवाओं की जनसंख्या बड़ी संख्या में है, पर्यटन क्षेत्र के माध्यम से विशाल रोजगार और उद्यमिता के अवसर प्रदान कर सकते हैं। छोटे कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में होम-स्टे, स्थानीय गाइड सेवा, पारंपरिक व्यंजन और हस्तशिल्प आधारित पर्यटन न केवल युवाओं को आत्मनिर्भर बना सकते हैं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा का संचार कर सकते हैं। पर्यटन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष शांति और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना है। जब विभिन्न देशों के लोग एक-दूसरे से जुड़ते हैं तो यह न केवल सांस्कृतिक समझ को बढ़ाता है बल्कि आपसी विश्वास और सहयोग की नींव भी रखता है। संयुक्त राष्ट्र ने भी पर्यटन को 'शांति का दूत' कहा है। इतिहास गवाह है कि जब भी देशों के बीच पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा है, आपसी संबंध मजबूत हुए हैं। इसीलिए पर्यटन को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं बल्कि वैश्विक शांति और सहयोग की दिशा में एक प्रभावी उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए। डिजिटल तकनीक ने पर्यटन उद्योग में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं। ऑनलाइन बुकिंग, वचुअल टूर, एआई आधारित ट्रैवल गाइड और स्मार्ट पर्यटन समाधान ने यात्रियों के अनुभव को न केवल सरल बनाया है बल्कि अधिक सुलभ और सुरक्षित भी बनाया है। हालांकि तकनीक के उपयोग के साथ-साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी है। यात्रियों को अपने पर्यावरणीय

प्रभाव को कम करने, स्थानीय संस्कृति का सम्मान करने और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने जैसी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना होगा। केवल सरकार या उद्योग नहीं बल्कि प्रत्येक यात्री को भी यह समझना होगा कि उसकी छोटी-सी आवटें पर्यटन को सतत और परिवर्तनकारी बनाने में योगदान कर सकती हैं। भारत जैसे विविधताओं से भरे देश के लिए यह अवसर और चुनौती दोनों हैं। यहां हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं से लेकर केरल की बैकवाटर्स, राजस्थान के रेगिस्तान से लेकर पूर्वोत्तर की हरियाली, वाराणसी के घाटों से लेकर कश्मीर की वादियों तक असीमित संभावनाएं हैं लेकिन इन संभावनाओं के साथ जिम्मेदारियों का बोझ भी जुड़ा हुआ है। अगर पर्यटन को अनियंत्रित और असंतुलित तरीके से बढ़ने दिया गया तो यह न केवल प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाएगा बल्कि स्थानीय समुदायों और सांस्कृतिक विरासत को भी प्रभावित करेगा। इसलिए पर्यटन विकास की हर नीति में स्थिरता और समावेशिता को प्राथमिकता देनी होगी।

पर्यटन का असली अर्थ केवल यात्रा या मनोरंजन नहीं बल्कि सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय परिवर्तन है। जब हम पर्यटन को जिम्मेदारी से देखते हैं तो यह न केवल देशों की सीमाओं को जोड़ता है बल्कि दिलों को भी जोड़ता है। यह नए अवसरों के द्वार खोलता है, समाज को अधिक समान और समावेशी बनाता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और सुंदर पृथ्वी छोड़ने की दिशा में प्रेरित करता है। पर्यटन का उद्देश्य केवल आज की जरूरतें पूरी करना नहीं बल्कि आने वाले कल को भी सुरक्षित और समृद्ध बनाना है। यदि हम इस उद्योग को सतत परिवर्तन का वाहक बना सके तो यह न केवल करोड़ों लोगों की जिंदगी बदल देगा बल्कि एक बेहतर, अधिक न्यायसंगत और संतुलित दुनिया की नींव भी रखेगा। यह समय केवल पर्यटन की आर्थिक उपलब्धियों का जश्न मनाने का नहीं बल्कि इसे सामाजिक प्रगति, पर्यावरण संरक्षण और वैश्विक सहयोग का सशक्त माध्यम बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाने का है।

(लेखक - योगेश कुमार गोयल /ईएमएस)

महाविनाश 'रूको ! '

पहाड़ों से दैत्याकार रूप धरे प्रचंड वेग से नीचे उतरती नदी से चट्टानों ने कहा।
' क्यों ? ' घनघोर आवाज के साथ नदी ने पूछा।
' इतनी तेज जाओगी, तो तबाही मचाओगी। धीरे-धीरे जाओ। ' चट्टानों ने सलाह दी।
' मुझे धीरे ही तो नहीं जाना है।' नदी ने चट्टानों से टकराकर उछलते हुए जवाब दिया।' क्यों बहना ? ' चट्टानों ने निरीह स्वर में प्रश्न किया।
' मालूम हुआ है कि धरती पर अत्याचार, अनाचार बढ़ गया है। नैतिकता ध्वस्त हो चुकी है। इंशान राक्षस, नराधम बन चुका है।धरती से सारे पापियों का विनाश करना है। ' नदी ने क्रोध में गरजते हुए कहा।' ममर तुम्हारी इस विनाशलीला से तो वे निर्दोष भी मारे जाएंगे, जिन्होंने पाप नहीं किया है ? ' चट्टानों ने स्वाभाविक प्रश्न किया।
' तो क्या हुआ ? जब पाप हो रहा था, तो ये लोग चुपचाप तमाशा क्यों देखते रहे उसका प्रतिरोध क्यों नहीं किया ?इसीलिए.....।' अपनी बात पूरी किए बिना हह्राती - भरभराती - गड़गड़ाती हुई नदी धरती की ओर बढ़ गयी।

- डा.विजयानन्द विजय
गाजियाबाद, उ.प्र.

लौटने, अपने अस्तित्व में पूर्वजों के योगदान को स्वीकार करने और अगली पीढ़ी तक कृतज्ञता के संस्कार पहुंचाने का अवसर है।धार्मिक मान्यता है कि इस अवधि में पितर सूक्ष्म रूप से अपने वंशजों के निकट आते हैं और श्रद्धापूर्वक किए गए तर्पण, पिंडदान, अन्नदान तथा श्राद्ध को स्वीकार कर आशीर्वाद देते हैं। इसे वैज्ञानिक तथ्य के बजाय धार्मिक आस्था और परंपरा के रूप में समझना उचित है। किंतु इसके पीछे छिपा सामाजिक और दार्शनिक संदेश सर्वभौमिक है,मनुष्य अकेला नहीं बनता; उसके वर्तमान के पीछे माता-पिता और अनेक पीढ़ियों का त्याग,परिश्रम, संस्कार और संघर्ष खड़ा होता है। यही कारण है कि पूजज- स्मरण की परंपराएं केवल भारत तक सीमित नहीं हैं।दुनियाँ की अनेक संस्कृतियों में अलग-अलग रूपों में दिवंगत पूर्वजों को स्मरण करने, उनकी कन्नों या स्मृति-स्थलों पर जाने और परिवार के साथ उनकी स्मृतियां साझा करना अधिनियम, 2007 जैसी कानूनी व्यवस्था स्थापन और रिश्तेदारों की जिम्मेदारियों के प्रश्न को विधिक आयाम भी देती है। लेकिन प्रत्येक पारिवारिक संबंध को कानून के सहारे जीवित नहीं रखा जा सकता। अदालत आर्थिक भरपन- पोषण का लक्ष्य और रिश्तेदारों की जिम्मेदारियों को पुत्र के स्नेह में और पिता की प्रतीक्षा को अकेलेपन के संवाद में परिवर्तित करने का आदेश कोई कानून नहीं दे सकता।

किशन सनमुखदास भावनानी

एशियाई खेलों में गुलवीर ने रजत पदक जीता



आइची (ईएमएस)। भारतीय एथलीट गुलवीर सिंह ने एशियाई खेलों में पुरुषों की 10,000 मीटर स्पर्धा में रजत पदक जीता है। गुलवीर ने 28:29.38 का समय निकालकर पोलैंड पर अपनी जगह पक्की करने के साथ ही भारत की पदक तालिका में एक रजत और जोड़ दिया। गुलवीर ने पिछले एशियाई खेलों में इसी स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था। पिछले संस्करण में उन्होंने इसी स्पर्धा में कांस्य पदक जीता है।

पुरुषों की 10,000 मीटर दौड़ में गुलवीर ने 28:29.38 के समय के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। वहीं इस स्पर्धा का स्वर्ण पदक बहरीन के

बिरहानु बालेव ने 28:27.51 के समय के साथ जीता, जबकि अल्बर्ट किप्टू ने 28:34.38 का समय निकालकर कांस्य पदक जीता।

गुलवीर ने इससे पहले ग्लासो राष्ट्रमण्डल खेलों में उन्होंने 10,000 मीटर स्पर्धा में रजत पदक और 5,000 मीटर स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था। एशियन एथलेटिक्स चैम्पियनशिप 2025 में भी उन्होंने 5,000 और 10,000 मीटर दोनों स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी धाक जमाई थी। पिछले दो सालों से वह लगातार शानदार प्रदर्शन के दम पर भारतीय लंबी दूरी की दौड़ में एक प्रमुख चेहरा बनकर उभरे हैं।

भारतीय एथलीट सावन ने मैराथन में रजत जीतकर बनाया रिकार्ड



आइची (ईएमएस)। यहां जारी एशियाई खेलों में भारतीय एथलीट सावन ने मैराथन दौड़ में पदक जीतने के साथ ही एक नया रिकार्ड बनाया है। इस स्पर्धा में सावन ने 2 घंटे 11 मिनट 36 सेकंड का समय निकालते हुए रजत पदक जीता। यह न केवल उनके व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को दर्शाता है, बल्कि इससे 44 साल के लंबे इंतजार के बाद भारत को मैराथन में पहला पदक मिला है। इससे पहले 1982 में भारत ने मैराथन में पदक जीता था। सावन ने 2:11:36 का सबसे कम समय निकालकर नया राष्ट्रीय रिकार्ड भी बनाया। इसी साल रॉटरडैम मैराथन में उन्होंने 2 घंटे 12 मिनट से कम समय में दौड़ पूरी कर शिवनाथ सिंह के 48 साल पुराने राष्ट्रीय रिकार्ड को तोड़ा था।

निशानेबाजी में तिलोत्तमा , विदर्सा और आशी ने रजत जीता

50 मीटर राइफल श्री पोजीशंस टीम स्पर्धा

नागोया (ईएमएस)। भारतीय महिला निशानेबाजों तिलोत्तमा सेन, विदर्सा विनोद और आशी चौकसी की तिकड़ी ने यहां जारी एशियाई खेलों में शानदार प्रदर्शन करते हुए 50 मीटर राइफल श्री पोजीशंस टीम स्पर्धा में रजत पदक जीता है। तिलोत्तमा, विदर्सा और आशी ने इस सफलता के साथ ही भारत की पदक तालिका में एक और पदक जोड़ा है। इस शानदार प्रदर्शन के साथ ही, तिलोत्तमा सेन और विदर्सा विनोद ने व्यक्तिगत स्पर्धा के फाइनल में भी प्रवेश किया है।

भारतीय निशानेबाज टीम ने कुल 1763 अंक हासिल कर दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस स्पर्धा में चीन ने 1773 अंकों के साथ ही नया रिकार्ड बनाते हुए स्वर्ण पदक जीत जबकि कजाकिस्तान ने कांस्य पदक जीता। भारतीय तिकड़ी पूरे क्वालिफिकेशन राउंड के दौरान अपने प्रदर्शन से छाथी रही। अलग-अलग



पोजीशन में उनके द्वारा बनाए गए संयुक्त स्कोर से टीम को अच्छे स्कोर तक पहुंचाया। शुरुआती चरणों में तिलोत्तमा और आशी सबसे आगे के निशानेबाजों में शामिल थीं, वहीं विदर्सा ने मुश्किल शुरुआत के बाद

शानदार वापसी करते हुए टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। वहीं व्यक्तिगत प्रदर्शन की बात करें तो, विश्व में 107वीं रैंकिंग पर कायम तिलोत्तमा सेन ने कुल 590 अंक लेकर क्वालिफिकेशन में तीसरा स्थान

हासिल किया। उन्होंने अपनी निरंतरता का अद्भुत प्रदर्शन करते हुए नीलिंग और प्रोन चरणों के बाद शीर्ष तीन में जगह बनाई। वहीं, विदर्सा विनोद ने 588 अंकों के साथ छठे स्थान पर रहते हुए व्यक्तिगत फाइनल में अपनी जगह बनायी। इसके अलावा आशी चौकसी ने भी टीम के लिए 585 अंक हासिल किये। ये टीम के रजत पदक जीतने में निर्णायक साबित हुए। गौरतलब है कि क्वालिफिकेशन प्रारूप के अनुसार, निशानेबाजों को नीलिंग, प्रोन और स्टैंडिंग प्रत्येक पोजीशन में 20-20 शॉट लगाने होते हैं। तीनों खिलाड़ियों के संयुक्त स्कोर से टीम पदक तय होता है, जबकि व्यक्तिगत स्पर्धा में शीर्ष आठ खिलाड़ी फाइनल में पहुंचते हैं, जिसमें प्रत्येक देश से अधिकतम दो निशानेबाजों को ही क्वालिफाई करने की अनुमति होती है। व्यक्तिगत क्वालिफिकेशन में चीन की हान जियायू 594 अंकों के साथ शीर्ष पर रहीं, जबकि तिलोत्तमा के 590 अंकों ने उन्हें तीसरे स्थान पर रखा। टीम स्पर्धा में रजत पदक जीतने के बाद, अब सभी की निगाहें तिलोत्तमा और विदर्सा के व्यक्तिगत फाइनल पर टिकी हैं।

अभी संन्यास नहीं लेंगे रोनाल्डो पुर्तगाल के लिए खेलते रहेंगे

लिस्बन (ईएमएस)। फीफ विश्वकप फुटबॉल में पुर्तगाल टीम के खराब प्रदर्शन के बाद से ही अटकलें लगायी जा रही थीं कि टीम के कप्तान और स्टार खिलाड़ी क्रिस्टियानो रोनाल्डो अब किसी भी समय संन्यास ले सकते हैं पर रोनाल्डो ने इससे इंकार किया है। इस फुटबॉलर का कहना है कि अभी उनका संन्यास लेने का कोई इरादा नहीं है। साथ ही कहा कि वह तब तक खेलते रहेंगे जब तक मैदान पर अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। रोनाल्डो ने हालांकि माना है कि विश्व कप में टीम की हार के बाद उन्होंने अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से संन्यास लेने के बारे में गंभीरता से सोचा था, पर अब उनका पूरा ध्यान आगामी मुकाबलों में पुर्तगाल को जीत दिलाने और टीम के लक्ष्यों को हासिल करने पर केंद्रित है। रोनाल्डो ने बताया कि विश्व कप के अंतिम-16 में स्पेन के खिलाफ मिली हार के बाद उनके मन में अपने अंतरराष्ट्रीय करियर को खत्म करने का विचार आया था। उन्होंने कहा, हां, मैंने ऐसा सोचा था। मैं हमेशा अपने फैसलों, अपने भविष्य और वर्तमान के बारे में सोचता रहता हूं। हालांकि, अब उन्होंने इस पर अंतिम निर्णय ले लिया है और अपने देश के लिए खेलना जारी रखने का संकल्प लिया है। इस 39 वर्षीय दिग्गज खिलाड़ी ने बताया कि उन्होंने इस महत्वपूर्ण निर्णय के बारे में देश के फुटबॉल संघ के अध्यक्ष और अपने पूर्व क्लब अल-नासर के कोच जॉर्ज जोसस



से विस्तार से बातचीत के बाद फैसला किया है। जोसस, जिन्होंने हाल ही में मई में अल-नासर को सऊदी लीग का प्रतिष्ठित खिताब दिलाया था और रोनाल्डो की क्षमताओं से भली-भांति परिचित हैं, ने भी इस चर्चा में भाग लिया। रोनाल्डो ने कहा, मुझे अब भी पूरा विश्वास है कि मैं राष्ट्रीय टीम की मदद कर सकता हूं और उसे उसके निर्धारित लक्ष्य तक पहुंचा सकता हूं। मैं तब ही संन्यास लूंगा, जब मुझे यह महसूस होगा कि मैं टीम के लिए अब कुछ भी कर पाने में सक्षम नहीं हूं।

महिला क्रिकेटर फातिमा अब बाबर आजम से भी आगे निकली : वसीम

लाहौर (ईएमएस)। पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद वसीम ने महिला क्रिकेट टीम के कप्तान फातिमा सना की जमकर तारीफ की है। वसीम ने कहा कि आज के समय में फातिमा पुरुष टीम के अनुभवी बल्लेबाज बाबर आजम से भी बेहतर है। साथ ही कहा कि अपने प्रदर्शन से उसने लोकप्रियता में बाबर को भी पीछे छोड़ दिया है। महिला टीम के कोच रहे वसीम ने कहा कि अगर क्रिकेट को गहराई से समझने वाले और जानकार दर्शकों के बीच फातिमा और बाबर की तुलना की जाए, तो फातिमा कहीं आगे खड़ी नजर आती हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या बाबर पुरुष टीम में फातिमा के समकक्ष हैं, तो वसीम ने बिना किसी झिझक के फातिमा को इन सबसे ऊपर रखा। उन्होंने इस बात पर गर्व और दुख दोनों जताया कि फातिमा कई बार असाधारण प्रदर्शन करने के बावजूद हारने वाली टीम का हिस्सा बन जाती हैं। वसीम ने बताया कि हाल ही में उन्होंने एक टीवी एंकर को फातिमा को पाकिस्तान का सबसे लोकप्रिय क्रिकेटर बताते हुए सुना था, और वह इस बात से पूरी तरह सहमत हैं। मोहम्मद वसीम के अनुसार, लोकप्रियता केवल नाम या पहचान से नहीं मिलती, बल्कि निरंतर और प्रभावी प्रदर्शन से बनती है। उन्होंने कहा कि फातिमा बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, और अब जब पुरुष और महिला क्रिकेटर्स को एक साथ देखा जा रहा है, तो अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भी उनकी खूब तारीफ होती है। वहीं दूसरी ओर, पाकिस्तान के पुरुष क्रिकेट के कई



बड़े नामों को मौजूदा समय में इस तरह की लगातार प्रशंसा नहीं मिल रही है, जिसके पीछे उनका मौजूदा प्रदर्शन भी एक बड़ी वजह है। गौरतलब है कि फातिमा सना पाकिस्तान महिला टीम की कप्तान हैं और उन्हें दुनिया की बेहतरीन महिला हरफनमौला खिलाड़ियों में शामिल किया जाता है।

उन्होंने अब तक 134 एकदिवसीय और टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में कुल 157 विकेट अपने नाम किए हैं, जबकि निचले क्रम में बल्लेबाजी करते हुए 1500 से ज्यादा रन भी बनाए हैं। खास बात यह है कि पाकिस्तान महिला टीम को बड़े टूर्नामेंटों में भले ही लगातार सफलता न मिली हो, लेकिन फातिमा अपने गेंद और बल्ले दोनों से कई मौकों पर टीम के लिए सबसे प्रभावी खिलाड़ियों में से एक रही हैं।

रंगा संसार

नेहा ने पारस पर लगाए गंभीर आरोप



मुंबई (यशभारत)। अभिनेत्री नेहा वडोदिया इन दिनों एक्टर और पॉडकास्ट होस्ट पारस खन्ना को लेकर किए गए अपने एक पोस्ट के चलते सुर्खियों में हैं। दुनाली फेम नेहा ने पारस पर पैसों के लिए कथित तौर पर उनका गलत फायदा उठाने, झूठी ज्योतिषीय जानकारी देने और अनुचित तरीके से निजी संपर्क करने के गंभीर आरोप लगाए हैं। उनके इस पोस्ट के बाद सोशल मीडिया पर चर्चा तेज हो गई है। पोस्ट में नेहा ने पारस को तंज कसते हुए आबरा खन्ना भी कहा। हालांकि, इन आरोपों पर पारस खन्ना की तरफ से कोई प्रतिक्रिया सामने आई है या नहीं, यह अभी स्पष्ट नहीं है। नेहा ने 17 सितंबर को पारस की फोटो डालकर एक लंबा-चौड़ा नोट लिखा, जिसमें उन्होंने कहा कि पारस खुद को बड़ा ज्योतिषी बताता है और उसने उनके भविष्य को लेकर झूठा ज्ञान देने के लिए 101 रुपये लिए थे। नेहा ने आगे बताया कि बिग बॉस से निकलने के बाद जब वे मिले, तो पारस ने उनसे फोटो भेजने को कहा और गाना बनाने का वादा किया।

सूरज बड़जात्या के साथ काम करने का अनुभव बेहद खास- शरवरी

मुंबई (यशभारत)।हाल ही में पारिवारिक ड्रामा फिल्म ये प्रेम मोल लिया के टाइटल ट्रैक लॉन्च वेंच में, शरवरी ने बताया कि उन्होंने मशहूर गाने दीदी तेरा देवर दीवाना और मैया यशोदा देखते हुए ही अपनी बचपन गुजारा है। फिल्म निर्देशक सूरज बड़जात्या के साथ काम करने और राजश्री प्रोडक्शन की फिल्मों में गानों के पीछे की सोच को समझने के अनुभव को उन्होंने बेहद खास बताया। अभिनेत्री ने कहा कि वह इस अनुभव का हिस्सा बनकर खुद को बेहद आभारी और खुशकिस्मत महसूस कर रही हैं।

उन्होंने शूटिंग के दौरान सूरज बड़जात्या के साथ अपनी बातचीत का एक किस्सा भी साझा किया। शरवरी ने बताया, जब भी हम गानों की शूटिंग करते थे, तो सूरज सर मुझे मैया यशोदा और दीदी तेरा देवर दीवाना जैसे गानों की शूटिंग के समय की कहानियाँ सुनाते थे, और यह मेरा सबसे पसंदीदा समय हुआ करता था क्योंकि मैंने बचपन से ये सारे गाने देखे हैं। इन गानों के लिए दिल में बहुत प्यार है। उन्होंने आगे बताया कि सूरज

बड़जात्या ने उन्हें उन गानों से जुड़ी कुछ बिहाई-द-सीन्स डिटेल्स भी शेयर कीं, जिन्हें उन्होंने अपनी परफॉर्मेंस में शामिल करने की कोशिश की। अभिनेत्री ने यह भी बताया कि गानों पर काम करने से उन्हें राजश्री के फिल्ममेकिंग स्टाइल की एक अलग समझ मिली। शरवरी ने कहा, मुझे सच में लगता है कि यह पहली बार था जब मैंने देखा कि कोरियोग्राफी के अलावा, गानों में इतनी सारी चीजों का ध्यान रखना होता है, जैसे परिवार की भावनाएं, उनके साथ जो कनेक्शन बनता है, कहानी कैसे आगे बढ़ती है। मुझे लगता है कि यह पहली बार था जब मैंने देखा कि गाने कैसे फिल्म को आगे ले जाते हैं, कैसे वे कहानी को आगे ले जाते हैं और यह मेरे लिए बहुत खास अनुभव था। उनका यह अनुभव इस बात पर जोर देता है कि राजश्री की फिल्मों में सिर्फ मनोरंजन ही नहीं, बल्कि गहरी भावनात्मक और कथात्मक जड़ों से भी जुड़ी होती हैं। बता दें कि ये प्रेम मोल लिया में शरवरी वाघ के साथ आयुष्मान खुराना और अनुपम खेर मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे।



ईशा मालवीय का बॉलीवुड डेब्यू



मुंबई (यशभारत)। अभिनेता गुरमीत चौधरी और ईशा मालवीय आगामी रोमांटिक ड्रामा फिल्म तुम मेरे हो में पहली बार एक साथ नजर आएंगे। यह फिल्म ईशा मालवीय का बॉलीवुड डेब्यू भी है और यह 23 अक्टूबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म निर्माताओं ने

फिल्म का पहला पोस्टर जारी किया, जिसमें रोमांस, एक्शन और एडवेंचर से भरी एक जबरदस्त प्रेम कहानी की झलक मिलती है। पहले पोस्टर में गुरमीत और ईशा बादलों के बीच से गिरते हुए दिख रहे हैं, जिसके बैकग्राउंड में शहर का नजारा और डूबता सूरज है, और वे एक दूसरे को किस कर रहे हैं।

जेनिफर ने गोवा में रचाई दोबारा शादी

मुंबई (यशभारत)।टीवी की पॉपुलर एक्ट्रेस जेनिफर विंग्ट एक बार फिर अपनी शादी को लेकर सुर्खियों में हैं। उन्होंने अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड और बिजनेसमैन विलियम इश्माएल के साथ गोवा में दोबारा शादी की है। इस खास मौके की तस्वीरें और वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे हैं, जिनमें जेनिफर के परिवार और करीबी दोस्त भी उनके साथ नजर आ रहे हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, जेनिफर और विलियम ने मूल रूप से जुलाई 2026 में यूके में क्रिश्चियन रिटि-रिवाजों से शादी की थी। हालांकि, उस समय उनके कई करीबी दोस्त और परिवार



के सदस्य इस समारोह में शामिल नहीं हो पाए थे। इसी वजह से इस जोड़े ने अपने खास लोगों के साथ शादी का जश्न मनाने

और अपनी खुशियां बांटने के लिए गोवा में एक और समारोह आयोजित करने का फैसला किया।

‘पहला प्यार दूसरी बार’ चर्चा में

मुंबई (यशभारत)। नई स्टारकास्ट और यंग एनर्जी से भरपूर फिल्म ‘पहला प्यार दूसरी बार’ इन दिनों चर्चा में है। फिल्म के ट्रेलर के आने से पहले मेकर्स ने दर्शकों के लिए एक खास मजेदार वीडियो जारी किया है। इस वीडियो में फिल्म से डेब्यू कर रहे नए कलाकारों की मुलाकात अनुभवी अभिनेता अनुभव बक्सी, गुरलीन पन्ना और देवेश दीक्षित से होती है। इसके बाद शुरू होता है सवाल-जवाब, मजाक और एक-दूसरे की टांग खिंचाई का सिलसिला। वीडियो में स्पर्श वालिया, अलीशा चोपड़ा, कुणाल वैद, साक्षी वैद्य, तुषार छिब्बर और सरगुन कौर क्लूथरा जैसे नए चेहरे अपनी फिल्म के जरिए बड़े पर्दे पर शुरुआत करने जा रहे हैं। अनुभव बक्सी, गुरलीन पन्ना और देवेश दीक्षित ने इन नए चेहरों से कई मजेदार और चुटौती सवाल किए। बातचीत के दौरान उनकी खिंचाई भी हुई और फिल्म के नाम को लेकर भी मजाक देखने को मिला।



